भारतीय जनता पार्टी–हिमाचल प्रदेश

प्रदेश कार्यालय

प्रैस विज्ञप्ति दिनांक 21.09.2018

भारतीय जनता पार्टी प्रदेश कार्यसमिति बैठक में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के देहावसान पर एक शोक प्रस्ताव पारित किया गया। इस प्रस्ताव को प्रदेश उपाध्यक्ष श्री गणेश दत ने रखा व पूर्व मुख्यमंत्री व सांसद श्री शांता कुमार जी ने इस प्रस्ताव पर प्रकाश डाला व श्रद्धेय अटल जी के साथ अपने अनुभवों को कार्यकर्ताओं के साथ सांझा किया तथा अटल जी द्वारा देशहित में किए गए कार्यों व हिमाचल की दी गई सौगातों पर भी कार्यकर्ताओं को विस्तार से बताया। प्रस्ताव की प्रति संलग्न है।

सदैव अटल को विनम्र : श्रद्धांजलि

भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी शिमला दिनांक 19 एवं 20 सितम्बर 2018 में पारित

शोक प्रस्ताव

'' मैं जी भर जिया, मैं मन से मरूँ, लौटकर आऊँगा, कूच से क्यों डरूँ''

ये कविता के अंश उस महान आत्मा, भारत रत्न, महामानव, कवि सम्राट, पत्रकार, साहित्यकार एवं श्रेष्ठ राजनेता एवं विश्व के जाने माने प्रखर वक्ता, पुण्य आत्मा श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के हैं। जो 16 अगस्त 2018 को हम से विदा होकर चले गए और छोड़ गए अपनी समृतियां। अटल जी का जाना हम सबके मन में एक रिक्तता छोड़ गया है जिसकी पूर्ति असंभव है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक के संस्कार उनमें आचरण की मर्यादा हम सब के लिए एक प्रेरणा है। 25 दिसम्बर, 1924 को एक सभ्रांत शिक्षक परिवार में जन्मे श्री अटल जी लगभग 60 साल तक राजनीति के क्षीतिज पर छाये रहे। अटल जी गत् 10 वर्षों से सार्वजनिक जीवन से दूर थे। एक गम्भीर बीमारी ने उनको घेर लिया था और घर की चारदीवारी में जिन्दगी अपना समय बीता रही थी, एकाएक मौत से उनका मुकाबला हो गया और मौत जिन्दगी से बड़ी हो गई।

राजनीति में कार्य करने वाले लोग यदि दस दिन तक लोगों की आंखों से ओझल होते हैं तो शायद लोग उन्हें भूलना शुरू कर देते हैं लेकिन अटल जी 10 वर्ष तक बिमारी की हालात में थे और 10 वर्ष बाद जब उनके देहान्त की खबर आयी तो ''घरती रोई, नभ रोया सबको लगा मेरा सब कुछ खोया'' वास्तव में अटल जी का जाना हर भारतीय के लिए सहन करने वाली क्षति नहीं थी। वह तो हर भारतीय के लिए एक वज्रपात से कम नहीं था। अटल जी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, जनसंघ, भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेता और पार्टी के पहले अध्यक्ष रहे। 10 बार लोकसभा सांसद, 2 बार राज्यसभा सांसद एवं तीन बार प्रधानमंत्री रहे। अपने कार्यकाल में भारत को विश्व की परमाणु शक्ति बनाने का गौरव प्राप्त हुआ। परमाणु विस्फोट करने की इच्छा शक्ति का उन्होंने सारे विश्व को दर्शन करवाया। ''जय जवान, जय किसान का नारा पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने दिया था और श्रद्धेय अटल जी ने ''जय विज्ञान'' का नारा जोड़कर ''जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान'' के नारे को धरातल पर उतारने का कार्य किया और साथ ही आधुनिक तकनीक के माध्यम से सरकार व समाज में कार्य क्षमता बढ़ाने का भी सफल प्रयोग किया।

1977 में जब देश में जनता पार्टी की सरकार बनी और अटल जी विदेश मंत्री बने तो यू0एन0 में हिन्दी में भाषण देकर राष्ट्र का सम्मान बढ़ाया। एक प्रमाणिक संस्कार वाले राजनेता की राष्ट्रभक्ति की उनकी मर्यादा और आचरण सारे देश ने ही नहीं, सारे विश्व ने देखा है। देश में विपक्ष की सरकार सत्ताधीन होने के बावजूद यू0एन0 में भारत का पक्ष विश्व पटल पर रखने का सौभाग्य भी अटल जी को प्राप्त हुआ है। यह उनकी कुटनीतिक योग्यता की पहचान व भविष्य को पहचानने की उनकी दूरदृष्टिता वाली छवि ही थी।

श्रद्धेय अटल जी ने 22 दलों के गठबंधन को एक साथ चलाकर देश में एक नया प्रयोग किया और जो दल हमारी विचारधारा के खिलाफ थे उन्हें भी विचारधारा के साथ–2 विकास की धारा से भी जोड़ने का प्रयोग किया और बढ़िया सरकार चलाई। अंत्योदय अन्न योजना श्रद्धेय अटल जी की सबसे गरीब व्यक्ति की सरकार की चिंता और गरीब को दो समय का भोजन मिले, उन्होनें अंत्योदय अन्न योजना शुरू कर एक पुण्य का कार्य किया और समाज में सबसे गरीब व्यक्ति की चिंता की।

हिमाचल प्रदेश को विद्युत परियोजनाओं में 12 प्रतिशत मुफ्त बिजली का सिद्धांत शुरू कर हिमाचल प्रदेश को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

''कारगिल युद्ध'' में जब हमारा पड़ोसी पाकिस्तान अपनी कूटिल चाल से हमारे भूमि हड़पने की चेष्टा कर रहा था तथा वीर सैनिकों को मारने का प्रयास कर रहा था तो अमरीका ने दबाव बनाया कि अटल जी युद्ध के बीच में अमरीका से बात करने आयें लेकिन अटल जी का दृढ़ निश्चिय इतना कठोर था कि उन्होंने अमरीका से कहा कि जब तक पाकिस्तान का एक–एक घुसपैठिया हमारी सीमा से बाहर नहीं खदेड़ा जाएगा तब तक मैं किसी से भी बात नहीं करूँगा। अमरीका ने दबाव बनाने के लिए कई प्रतिबन्ध लगाए और अन्य धमकियां दी लेकिन अटल जी ने कहा हम स्वाभिमानी भारत के नागरिक हैं हम किसी प्रतिबन्ध की परवाह नहीं करते। थक हार कर अमरीका को सभी प्रतिबन्ध हटाने पड़े । अटल जी न रूके, न झूके और थके, ये है राष्ट्रभक्त, स्वयंसेवक की पह्चान।

हिमाचल प्रदेश सदैव श्रद्धेय अटल जी का ऋणी रहेगा, क्योंकि उनके हिमाचल के प्रति अपार स्नेह के कारण उनके कार्यकाल में हिमाचल प्रदेश को 1400 करोड़ की अतिरिक्त सहायता प्रदान की । हिमाचल को विशेष श्रेणी राज्य में शामिल किया जिससे हिमाचल का सर्वांगीण विकास हुआ।

हिमाचल प्रदेश का जनजातीय क्षेत्र लाहौल–स्पिति खराब मौसम के कारण वर्ष के अधिकांश समय शेष विश्व से कटा रहता है। दुर्गम लाहौल स्पिति के घाटी के लिए रोहतांग सुंरग के निर्माण का विचार 1998 में श्री वाजपेयी जी के मन में आया था। उन्होंने इस परियोजना के निर्माण की घोषणा 3 जून 2000 को की थी। यह परियोजना अब पूरा होने के कगार पर है और यह राज्य के लिए वाजपेयी जी का सबसे बड़ा उपहार होगा और क्षेत्र के लोग 12 महीने शेष विश्व से जुड़े रहेंगे।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने ही वर्ष 2003 में हिमाचल प्रदेश के लिए औद्योगिक विकास के लिए विशेष पैकेज की घोषणा की थी, इस पैकेज के मिलने से राज्य में हजारों करोड़ रू0 का औद्योगिक निवेश हुआ और राज्य के लाखों युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त हुए।

अटल जी ने हिमाचल प्रदेश में कोल डैम परियोजना और पार्वती जलविद्युत परियोजना का शिलान्यास किया था। इसके अतिरिक्त सोलन के समीप हरठ में मोहन शक्ति नेशनल हैरीटेज पार्क का शिलान्यास भी उनके कर कमलों से ही सम्पन्न हुआ।

उनके निधन से न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया ने एक दूरदर्शी, परिपक्व, संवेदनशील, विराट हृदयी और दृड़ इच्छा शक्ति वाला नेता खो दिया है। उनके दिखाए रास्ते पर चलकर हम भारत को एक महान राष्ट्र बनाने के उनके संकल्प को पूरा करने में सहभागी बनेगे।

भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश कार्यसमिति श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के दुःखद निधन को राष्ट्रीय क्षति मानती है, जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में संभव नहीं है। कृतज्ञ राज्य हिमाचल अटल जी को शत्–शत् नमन करता है। यद्यपि उनका शरीर आज हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनके संस्कार, उनकी राष्ट्र भक्ति तथा उनकी स्मृति हम सभी के हृदय में विद्यमान है। हम प्रभु से प्रार्थना करते है कि अटल जी की कविता के अनुसार '' मैं लौटकर आऊँगा'' यह साकार हो और अटल जी जैसा व्यक्तित्व हमारे हर घर में पैदा हो।

————————————————————————————